T.D.C - I

Psy :- 1st Paper.

FREEMIND

Date

Page

SENSORY - SYSTEM - संवेदी प्रणाली

हम सभी ऊर्जा के जगत मे रहते है, भौतिकी के अध्यन से पता चलता है कि हम चारो ओर से अंतरिक्ष किरणो प्रकाश तरंगो, उष्मा तरंगो तथा ध्वनि तरंगो से घिरे रहते है इस भौतिक जगत से हमारा प्रथम सम्पर्क हमारी संवेदी प्रणाली या संग्राहको से होता है और हमें दृष्टि, ध्वनि, ताप स्पर्श, स्वाद, गति, गन्ध आदी का बोध होता है। प्रत्येक संवेदी अंग एक विशेष प्रकार को ही भौतिक उर्जा को ग्रहण करने के लिए बना होता है जैसे- कान ध्वनि के लिए, जीभ स्वाद के लिए, यहाँ महत्वपूर्ण बात यह है कि किसी संग्राहक को एकमात्र भौतिकी उद्दीपक कहते है, जैसे नेत्र के लिए प्रकाश पर्याप्त या उपयुक्त उद्दीपक है, तो कान के लिए ध्वनि तरंगे उपयुक्त उद्दीपक है हमारा शरीर इस प्रकार का बना हुआ है कि विशिष्ट संवेदी अंग या संग्राहक विभिन्न भौतिक उर्जाओ को ग्रहण करते है और इसको संवेदना के रूप में बदल देते है ये संवेदनाएँ हमारे प्रेरको के संतुष्टि के लिए व्यहार का मार्ग प्रदर्शन करने के लिए आधार बन जाते है।

आमतौर पर मानव अपनी संवेदी प्रणाली के अंतर्गत आठ प्रकार की संवेदनाओ द्वारा वाह्य जगत में सूचनाओ का संग्रह करते है ये संवेदनाएँ है- दृष्टि (Visual) श्रवण (Audotory) स्पर्श या त्वचीय (Touch or Cutaneous) गन्ध (Olfactory), स्वाद (Gustatory) संतुलन Vestibular तथा गति (Kinesthetic) है। इसके अतिरिक्त स्पर्श संवेदना के दो और प्रकार ताप (Temprature) तथा पिड़ा (Pain) भी संवेदनाएँ भी होती है इनमें दृष्टि संवेदना तथा श्रवण संवेदना सार्वधिक विकसित, जटिल और महत्वपूर्ण है।